पूर्वोत्तर सृजन पत्रिका: विशेषज्ञों द्वारा समीक्षित वार्षिक हिंदी ई-पत्रिका
वर्ष: 2; संख्या:2; 2021: पृष्ठ संख्या: 55-59

मिजो वर्णमाला गीत

✍ डॉ. जेनी मलसोमदोङकिमी

मिजो भाषा की अपनी लिपि न होने के कारण पौराणिक कहानियाँ, लोकगीत आदि मौखिक रूप से पीढ़ी दर पीढ़ी प्रवाहित हुए हैं। इसी कारण हर पीढ़ी में इन कहानियों और लोकगीतों में कुछ न कुछ बदलाव की संभावना बनती गयी है। विदित हों कि अँग्रेज मिशनरियों के आने के पश्चात् मिजो भाषा को रोमन लिपि मिली, तत्पश्चात् रोमन लिपि में ही साहित्यिक रचनाओं और पौराणिक कथाओं, लोकगीतों को उसका लिखित रूप मिला। यदि कहा जाए कि मिजो भाषा की साहित्यिक कृतियाँ अन्य भारतीय साहित्यिक कृतियों की अपेक्षा नवीन हैं, तो शायद यह कथन गलत नहीं है; किन्तु अपने इस छोटे समय में मिजो साहित्य ने बहुत प्रगति की है। हिन्दी भाषा में मिजो साहित्यिक रचनाओं के प्रति हम यह कह सकते हैं कि गत कुछ वर्षों से हिन्दी में इस प्रदेश की साहित्यिक कृतियाँ अपने नन्हें कदम बढ़ा कर अपनी युवावस्था में पहुँच रही है।

मिजो भाषा को उसकी लिपि अर्थात् वर्णमाला सन् 1893 से 1896 के बीच मिली। पहले की वर्णमाला में कुल 24 वर्ण हुआ करते थे, जबकि वर्तमान में कुल 25 वर्ण हैं। मिजो वर्णमाला संबंधी गीत की रचना सन् 1924 में श्री चो.पसेना ने की, जिन्हें 'मिजोरम जिरना पा" अर्थात् 'मिजोरम शिक्षा के पिता" के नाम से जाना जाता है। इस गीत की रचना उन्होंने इस उद्देश्य से की थी कि अध्येता जब शिक्षा ग्रहण करने विद्यालय जाए; तो आसानी से इस गीत को गाते हुए मिजो वर्णमाला को याद कर सके। इस गीत की रचना उन्होंने तब की थी, जब वे मुंबई से समुद्री जहाज से उच्च शिक्षा ग्रहण करने लंदन के गोल्डस्मिथ कॉलेज में सर हर्बर्ट लुइस की देखरेख में जा रहे थे। शाम के समय जब वे समुद्री जहाज के खुले बरामदे में डूबते सूरज को देख रहे थे, तब पाँच मिनट के अंतराल में उन्होने इस गीत की रचना कर डाली थी। उनके द्वारा रचित वर्णमाला गीत इस प्रकार है :

"Sikul ka luh tirhin mikhual ang ka ni a,
Ka pawl min siam sakin ka hming an han ziak a.

Mak ti awm fahranin **A** ka han ti phawt a,
Lungleng awm tak maiin **AW** ka han ti a.
B ka han sa ta a, chhawn tur van vei vei nen,
Ka kawi bawm min ti ngai, kan tual zawl nuam tak nen.
Ban hma loh phei chuanin **Ch** ka lam ka lam ṭhin.
Ei tak tak si lovin **D** hmun ka thleng ṭhin.
Phul emaw ka lo ti, **E** a ni aw zawng lo,
F ka han kai hi chuan a lo awzia ta zawk.
G ka han kai leh chuan vai rim a nam rum rum.
Aieng awm si lovin **Ng** ka tih tak chu.
Hahchhiau chhuak ang maiin **H** ka han ti a,
Zungchala kawk zelin **I** ka han ti chiam a,
Mal rawl teuh ang maiin **J** ka ti ṭhawl ṭhawl a.
K a kal si lovin thui tak tak ka kal.
Lo zir hmasa te hi **L** ngawt ka tum ta a,
Lum ti awm tak maiin **M** ka ti em awm thin.
N lovin ka zir ṭhin, dang nal hnuah phei chuan,
O ka ti o o ṭhin, vawn ka tum vangin.
P ka lam apiangin ka pu pawh ka hre ṭhin.
R ka lam erawh chuan kan sum hmun ka hre ṭhin
S ka kai leh hi chuan ka saisik seih seih ṭhin.
T ka kai chinah ka titi ta ṭhin.
Vai ral kian hnu pawhin **Ṭ** ka ti leh dek ṭhin.
U kianga ka awmin ka lo uang em em a,
Khuai lam te pawh zirin **V** ka ti vang vang ṭhin
Z ka lo thleng ta a, ka chhiar zet zet mai.
I kir leh ang vangkhuaan, nu leh pa unau ṭhenrualte lawman.”

“सीकुल क लुह् तिरिन मिखुआल अङ क नी अ
क पोल मिन सियाम सकिन क म्हिङ अन हन् ज़ियाक अ
मक तिह् ओम फशनइन **आ** क हन ति पह्होत अ
लुङलेङ ओम तक मइइन **ओ** क हन ति अ॰

बी क हन सा त अ, छोन तुर वान वेइ वेइ नेन.

क कोइ बोम मिन ति ङाइ, कन तुआल ज़ोल नुआम तक नेन.

बान ह्मा लउह् पह्हेइ चुआनइन **चो** क लम क लम ठिन

एइ तक तक सि लोविन **दि** म्हुन क थ्लेङ ठिन

पह्हुल एमो क लउ ति, **ए** अ नि ओ ज़ोङ लउ

एफइ क हन काइ हि चुआन अ लउ ओमज़िया त ज़ोक॰

एक् क हन काइ लेह् चुआन वाइ रिम अ नम रूम रूम।

अइएङ ओम सि लोविन **एङ** क तीह् तक चु।

हअह्छियाउ छुआक अङ मइइन **एछइ** क हन ति अ,

ज़ुङचलअह् कोक ज़ेलिन **इ** क हन ति चियाम अ,

मल रोल तेउह् अङ मइइन **ज़े** क ति ठोल ठोल अ।

के अ कल सि लोविन थुइ तक तक क कल।

लउ ज़िर म्हसा ते हि **एल** ङोत क तुम ता अ,

लुम ति ओम तक मइइन **एम** क ति एम ओम ठिन।

एन लोविन क ज़िर ठिन, दङ नाल न्हुअह् पह्इ चुआन

ओ क ति ओ ओ ठिन,वोन क तुम वाङइन।

पी क लम अपियाङइन क पु पोह् क शे ठिन।

आर क लम एरोह् चुआन कन सुम म्हुन क शेह् ठिन

एस्सि क काइ लेह् हि चुआन क सइसिक सइह् सइह् ठिन

ति क काइ चिनाह् क तिति त थीन

वाइ राल कियान न्हु पोह्इन **टी** क ति लेह् देक ठिन

उ कियाङआह क ओमइन क लउ उआङ एम एम अ,

खुआइ लाम ते पोह् जिरिन **वि** क ति वङ वङ ठिन

ज़ेत क लउ थ्लेङ ता अ, क छियार ज़ेत ज़ेत मइ

इ किर लेह् अङ वानखुआअन्न, नु लेह् पा उनाउ ठेनरुआलते लोमअन।”

मिजो वर्णमाला में अंग्रेजी वर्णमाला के समान स्वर और व्यंजन होते हैं, जबकि हिन्दी वर्णमाला में स्वर और व्यंजन को अलग-अलग लिखा-पढ़ा जाता है। मिशनरी एडविन रोलण्ड्स(जउसापथरा) के 31 दिसंबर, 1898 को आइजोल आने के पूर्व मिजो वर्णमाला कुछ इस प्रकार थी :-

1893-1896 :- *a, å, b, ch, d, e, f, g, h, i, j, k, l, m, n, o, p, r, s, t, ṭ, u, v, z (24)*

1898:- *a, aw, b, ch, d, e, f, g, h, i, j, k, l, m, n, o, p, r, s, t, ṭ, u, v, z (24)*

1940:- *a, å, b, ch, d, e, f, g, h, i, k, l, m, n, o, p, r, s, t, ṭ, u, v, z (23)*

यदि उपर्युक्त वर्णमाला को देखें, तो हम पायेंगे कि इस वर्णमाला में ng वर्ण शामिल नहीं हैं। सन् 1940 में मिशनरी जेम्स हर्बर्ट लोरेइन (पु बुआङा) ने अपने शब्दकोश में **J** वर्ण को मिजो वर्णमाला से निकाल दिया था। मिजो भाषा में G वर्ण के न होने के कारण **G** वर्ण के पूर्व **N** को रखकर **NG** वर्ण को पहचान दी गयी। सन् 1901 के "Mizo Zir Tir Bu" अर्थात् मिजो पाठ्यक्रम के दूसरे प्रकाशन में वर्तमान में प्रयुक्त 25 वर्णों को मान्यता मिली, जो इस प्रकार हैं :-

a, aw, b, ch, d, e, f, g, ng, h, i, j, k, l, m, n, o, p, r, s, t, ṭ, u, v, z (25)

चूंकि मिजो लिपि रोमन है, इस कारण इसकी वर्णमाला को और साहित्यिक रचनाओं को अंग्रेज़ी भाषा के समान पढ़ने की गलती होने के साथ ही कुछ आसानी भी हो जाती है। मिजो भाषा की वर्णमाला का उच्चारण मुख्यतः निम्न प्रकार से होता है :-

a, aw, b, ch, d, e, f, g, ng, h, i, j, k, l, m, n, o, p, r, s, t, ṭ, u, v, z

आ, ओ, बी, चो, दी, इ, एफइ, एक्(उत्तरी भाग)/जि(दक्षिणी भाग), एङ (उत्तरी भाग) एनजि(दक्षिणी भाग), एछइ, इ, ज़े, के, एल, एम, एन, ओ, पि, आर, एस्सि, ति, टी, उ, वि, जेत।

ग्रंथ-सूची :

देङकिमी, एच. हिन्दी और मिजोउ भाषा को व्याकरणिक कोटियों का व्यतिरेकी अध्ययन,2013

शोध-प्रबंध :

मलसोमदोङकिमी,जेनी.हिन्दी और मिजो व्याकरण : तुलनात्मक अध्ययन, मिजोरम विश्वविद्यालय,2017

वेब लिंक :

https://www.mizoramsynod,org

https://www.vanglaini.org

https://en.m.wikipedia.org

संपर्क-सूत्र:
सह हिन्दी शिक्षा अधिकारी
स्कूल शिक्षा निदेशालय
आइज़ोल, मिजोरम

पूर्वोत्तर सृजन पत्रिका